(1)

हिन्दी प्रतिष्ठा
B.A. Part I
प्रथम पत्र
मध्यकालीन हिन्दी काव्य

डॉ॰ [illegible] कुमार
[illegible]
हिंदी विभाग
एस॰ एन॰ सिन्हा कॉलेज,
जहानाबाद

सूरदास

'अविगत गति कछु कहत न आवै' पद में निहित विशेषताओं का उल्लेख — क्रमशः [illegible] समझा जा सकता है —

(1) प्रस्तुत पद सूरदास रचित भ्रमरगीत से संकलित है।

(2) प्रस्तुत पद में निर्गुण भक्ति की दुरूहता को रेखांकित किया गया है।

(3) प्रस्तुत पद में सगुण भक्ति साधना की ~~[illegible]~~ निर्गुणमार्गी को बताते हुए सगुण भक्ति-साधना पर जोर दिया गया है।

(4) सबसे नीचे की पंक्ति में 'सगुण लीला पद गावै' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह स्पष्ट करता है कि इसमें लोककल्याण की सगुण भक्ति साधना को प्रधानता है।

(5) दूसरी पंक्ति में निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति को गूँगे का गुड़ कहते हुए लोकोक्ति की विकटता का बोध होता है।

(6) चौथी पंक्ति में ब्रह्म को अगम और अगोचर कहते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि वह इन्द्रियों से परे है। इसलिए शास्त्रकारों ने उसे 'नेति नेति' कहा है। इसका न प्रारम्भ है और न अंत है क्योंकि यह इन्द्रियातीत भी है।

(7) पाँचवी पंक्ति में रूप शब्द आया है जिसका तात्पर्य है कि सगुण ब्रह्म में रूप होता है निर्गुण ब्रह्म का कोई रूप नहीं होता। सगुण ब्रह्म में राम, कृष्ण आदि का जैसा काला, साँवला इत्यादि रूप होता है वो निर्गुण में नहीं है।

(8) पाँचवीं पंक्ति में देखा शब्द आया है। देखा का अर्थ दिखना होता है। सगुण ब्रह्म में दिखना होता है निर्गुण ब्रह्म में नहीं। सगुण के साथ चतुर्भुज आकार कहते हैं, कृष्ण रूप की व्याख्या करते हैं जो निर्गुण में नहीं है।

(9) पाँचवीं पंक्ति में ही गुण शब्द आया है। सगुण ब्रह्म में दयालुता, कृपालुता, आदि गुण होते हैं जो निर्गुण ब्रह्म में नहीं है। सगुण ब्रह्म को कृपानिधान, दयानिधान, कृपा सागर इत्यादि शब्दों से संबोधित किया जाता है।

(10) जाति — स्वजाति, विजाति आदि ब्रह्म की कई जातियाँ सगुण भक्ति में होती है जो निर्गुण भक्ति में नहीं है।

(11) जुगुति शब्द का तात्पर्य यह है कि सगुण ब्रह्म को हम जाप, तप, नेम, व्रत, दान, पुण्य इत्यादि कई प्रकार से प्राप्त कर सकते हैं, पर निर्गुण ब्रह्म को हम जाप, तप, नेम, व्रत इत्यादि से प्राप्त नहीं कर सकते।

(12) प्रस्तुत पद में अलंकारों की छटा भी छहरती नजर आ रही है। दूसरी पंक्ति के प्रारम्भ में उदाहरण अलंकार है।

(13) पाँचवीं तथा छठी पंक्ति में अनुप्रास अलंकार की छटा देखने योग्य है।

(14) सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है जो अपने आप में मधुरता लिये हुए है।

(15) कवि की शैली में प्रौढ़ता एवं प्रवाह है। कवि का प्रवाह कहीं खंडित नहीं होता है।

(16) विद्यापति के बाद सूरदास के निकट आकर गीत एकबार फिर चमक उठा है। गीति काव्य के सारे गुण प्रस्तुत पद में है।

(17) रस की दृष्टि से प्रस्तुत पद भक्ति रस से सराबोर है।